देशज अस्मिता और रेणु साहित्य

संपादक

अनन्त

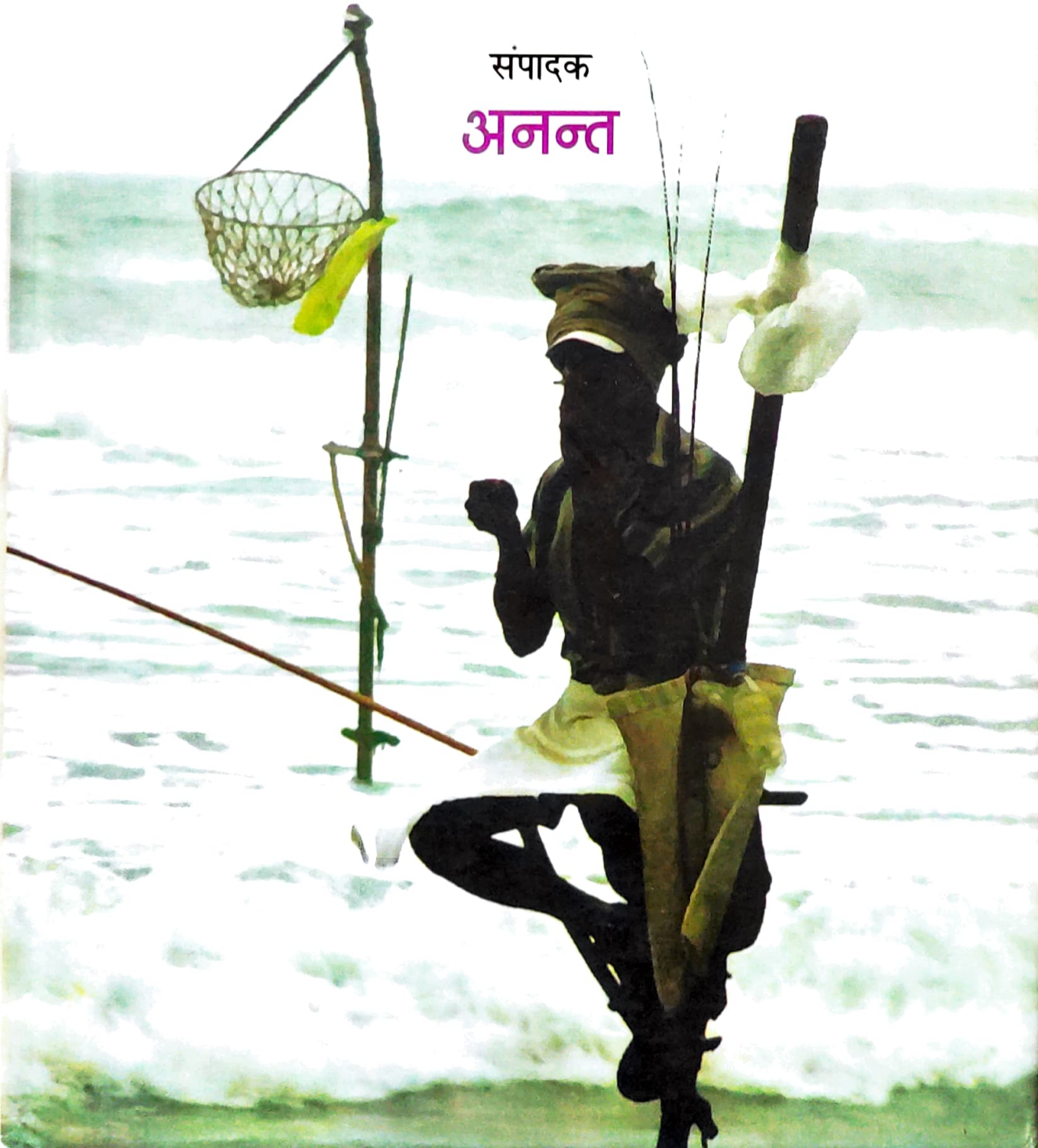

मूल्य : रु. 450
प्रथम संस्करण : 2019
सर्वाधिकार : संपादक / लेखकगण

प्रकाशक - कीकट प्रकाशन
ग्राम+पो. - कुरथौल, पटना (बिहार) - 804453
E-mail : keekatprakashan@gmail.com

साज-सज्जा : बिर बुरु ओम्पाय मीडिया, राँची (झारखंड)
मुद्रक : कंप्यूटेक प्रिंटर्स, E-17, पंचशील गार्डन, नवीन शहादरा
(जैन मंदिर के समीप), दिल्ली - 110032

Deshaj Asmita Aur Renu Sahitya

Edited by Anant

ISBN : 978-81-941660-1-6

लोक संवेदना को तलाशती : रसप्रिया

डॉ० संगीता मौर्य

स्वाधीन भारत के केंद्र में ग्राम विकास, इसका उत्थान एवं राष्ट्रीय उत्साह आदि रहा है। रेणु भी अपने उपन्यासों के केंद्र में इन्हीं मूल्यों को रखते हैं। रेणु अपनी कहानियों में परिवेश के अनुसार पात्रों को घोल देते हैं। इस सम्बन्ध में राजेंद्र यादव का कथन निश्चय ही इसकी अभिव्यक्ति करता जान पड़ता है कि "परिवेश-वातावरण जीवित पात्र की तरह सामने खड़ा होकर अपना हक अकेले रेणु में ही माँगता है...।" रेणु को अपनी मातृभूमि पूर्णिया के प्रति गहरा लगाव दिखाई पड़ता है। वे वहां की लोक परम्पराएं यथा - व्रत, त्योहार, संस्कार गीत एवं सामाजिक परिदृश्यों, जिनमें अभाव, अशिक्षा, अज्ञान, अंधविश्वास के बीच जूझता हुआ व्यक्ति भी इनकी कहानियों को जीवंतता प्रदान करता है। रेणु ग्रामीण अंचल में रचे-बसे कथाकार तो हैं ही, उनकी कहानियों का एक विस्तृत फलक भी है। उनकी कहानियों में आर्थिक बदहाली, राजनीतिक पिछड़ापन आदि का यथार्थ अंकन दिखाई पड़ता है। जब हम रेणु की कहानियों के विस्तृत फलक की बात करते हैं, तो निश्चय ही जेहन में उनके प्रेम संबंधों को आधार बनाकर लिखी गयी कहानियां भी उभरकर आती हैं, जिनमें 'तीसरी कसम' उर्फ 'मारे गए गुलफाम', 'एक आदिम रात्रि की महक' एवं 'रसप्रिया' जैसी कहानियां अपने टटकेपन से लोगों के दिलों में राज करती हैं।

'रसप्रिया' कहानी के समय पर गौर करें तो यह धर्मवीर की पत्रिका 'निकष' में सन 1955 में पहली बार छपी थी, जिसको 1959 में 'ठुमरी' नामक कहानी संग्रह में संगृहीत कर लिया गया। 'रसप्रिया' कहानी का समय देश की आजादी के लगभग कुछ ही वर्ष बाद का है। निश्चित ही यह सामाजिक एवं राजनीतिक उथल-पुथल का दौर था। जिस आजाद भारत की परिकल्पना हम सबने की थी, कहीं न कहीं वह आजाद भारत जन भावना की परिकल्पना से कहीं दूर खड़ा दिखाई पड़ा। उसी दूरी को बयां करता हुआ 'रसप्रिया' का समाज भी है। कभी गाँधी को दक्षिण अफ्रीका में नस्लभेद का सामना करना पड़ा जो कि उनके जीवन का अविस्मरणीय अध्याय बनकर रह गया, जिससे उनको गहरा आघात लगा था। वहीं दूसरी तरफ भारतीय परिदृश्य पर एक नजर डालें तो पेरियार, फुले और अम्बेडकर को अपने देश में ही हर कदम पर जाति का दंश झेलना पड़ा। आजाद भारत का पंचकौड़ी मिरदंगिया भी उसी जातीय दंश का शिकार है। कथित छोटी जाति के वृद्ध व्यक्ति को तथाकथित उच्च जाति का छोटा बच्चा भी उसकी औकात दिखाने से पीछे नहीं रहता। 'रसप्रिया' कहानी का यह कथन कि परमानपुर में उस बार एक ब्राह्मण के लड़के को उसने प्यार से 'बेटा' कह दिया था। सारे गाँव के लड़कों ने उसे घेरकर